(7) अभाव पदार्थ (Non-Existence)

अभाव किसी वस्तु का न होना है। अर्थात् "अभाव किसी वस्तु का किसी विशेष काल एवं स्थान में अनुपस्थिति है। परन्तु यह शून्य से भिन्न है।

वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद ने 'वैशेषिकसूत्र' में अभाव की चर्चा 'प्रमेय' (ज्ञेय) के रूप में की है, न कि 'प्रमाण' के रूप में। किंतु प्रशस्तपाद ने 'पदार्थधर्मसंग्रह' में अभाव का विशद विवेचन किया है। इनके बाद के वैशेषिकों ने भी अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ के रूप में ग्रहण किया है। इस प्रकार से पहले छः ही पदार्थ थे, परन्तु बाद में इनकी संख्या 7 हो गयी। इनमें से प्रथम 6 द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय भावात्मक पदार्थ माने गये हैं और अंतिम पदार्थ अभाव निषेधात्मक।

अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ मानने के निमित्त वैशेषिक-दर्शन में अनेक तर्कों का उल्लेख किया है। यथा —

(1). अभाव का ज्ञान प्रत्यक्ष से होता है। जब रात्रि के समय आकाश की ओर देखते हैं तब वहाँ सूर्य का अभाव पाते हैं। अतः सूर्य का रात्री काल में आकाश में दिखाई न देना उतना ही वास्तविक है जितना की रात्री-काल में चन्द्रमा और तारों का रहना। इसलिए अभाव को एक स्वतंत्र पदार्थ के रूप में स्वीकारा गया है।

(2). अभाव को पदार्थ मानना शाब्दिक अर्थ से भी प्रमाणित होता है। अर्थात् पदार्थ (पद + अर्थ) उसे कहा जाता है जिसे हम शब्दों के द्वारा व्यक्त कर सकें। अभाव को शब्दों के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। जैसे - कक्षा में हम हाथी का अभाव पाते हैं।

(3). यदि पदार्थ का अर्थ सत्ता हो तो भी अभाव को पदार्थ कहा जा सकता है।

(4). वैशेषिक दर्शन अनित्य वस्तुओं की सत्ता में विश्वास रखता है। परिवर्तनशील एवं अनित्य वस्तुओं की व्याख्या 'अभाव' के

अभाव में नहीं हो सकती। अत: अभाव को न मानने पर विश्व की सभी वस्तुएँ नित्य हो जायेंगी और वस्तुओं का नाश असंभव हो जाएगा। इसलिए 'अभाव' को स्वतंत्र पदार्थ के रूप में मानना आवश्यक है।

(5)- वैशेषिक दर्शन 'बाह्य सम्बन्ध' में आस्था रखता है। बाह्य संबंध की व्याख्या अभाव को पदार्थ के रूप में ग्रहण किए बिना संभव नहीं है। दो पदों या वस्तुओं में जब बाह्य सम्बन्ध स्थापित होता है, तब उससे यह पता चलता है कि कभी इनमें इस संबंध का 'अभाव' था और भविष्य में भी इस संबंध का कभी-न-कभी अवश्य 'अभाव' होगा।

(6)- मोक्ष की व्याख्या के लिए भी 'अभाव' को स्वतंत्र पदार्थ मानना आवश्यक है। क्योंकि मोक्ष का अर्थ ही है- 'दुखों का पूर्ण अभाव'। यदि अभाव को स्वतंत्र पदार्थ न माना जाए, तो फिर मोक्ष का कोई अर्थ नहीं होता।

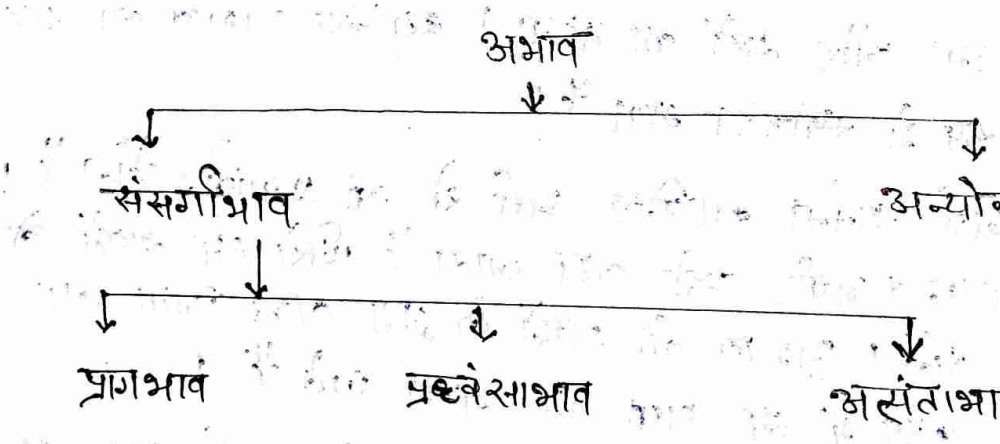

अभाव के प्रकार-भेद :→ अभाव दो प्रकार का होता है- (1) संसर्गाभाव (2) अन्योन्याभाव। इसे हम चार्ट के रूप में समझ सकते हैं। —

- अभाव
  - संसर्गाभाव
    - प्रागभाव
    - प्रध्वंसाभाव
    - अत्यंताभाव
  - अन्योन्याभाव

(1) संसर्गाभाव → दो वस्तुओं के संबंध के अभाव को संसर्गाभाव कहा जाता है। अर्थात जब एक वस्तु का दूसरी वस्तु में अभाव होता है, तो उस अभाव को संसर्गाभाव कहा जाता है। जैसे- जल में अग्नि का अभाव, वायु में गंध का अभाव, आदि।

संसर्गाभाव के प्रकार → यह तीन प्रकार का होता है —
प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव और अत्यंताभाव ।

(i) - प्रागभाव → "कार्योत्पत्तेः पूर्वं विद्यमानोऽभावः। अनादिः सान्तः।"
उत्पत्ति के पूर्व किसी वस्तु का अपने कारण में अभाव प्रागभाव है। उदा० - अपनी उत्पत्ति के पूर्व मिट्टी में घड़े का अभाव । यह अभाव अनादि एवं सांत है। यह अभाव अनादि काल से चला आ रहा था, किंतु घड़ा बनने पर यह अभाव समाप्त हो गया ।

(ii) - प्रध्वंसाभाव → "कार्यनाशकाले विद्यमानोऽभावः। सादिरनन्तः।"
विनाश के बाद वस्तु का अभाव ध्वंसाभाव है। उदा० - कुर्सी बनकर अजर-अमर नहीं हो सकती। इसका कभी नाश अवश्य होता है। कुर्सी के नष्ट होने पर इसके अभाव को 'प्रध्वंसाभाव' कहा जा सकता है। इस अभाव को आदि और अनंत कहा जाता है।

(iii) - अत्यंताभाव → "त्रैकालिकः अत एव नित्यः। नास्तीति प्रत्ययवेद्यः।"
दो वस्तुओं के सम्बन्ध का अभाव जो भूत, वर्तमान और भविष्य में रहता है, अत्यंताभाव कहलाता है। उदा० - रूप का वायु में अभाव । रूप का वायु में भूतकाल में अभाव था, वर्तमान काल में भी है, और भविष्य काल में भी होगा। यह अनादि और अनंत कहा जाता है। क्योंकि यह बताना असंभव है कि इस अभाव का कब आरंभ हुआ और कब अंत होगा ।

(2) अन्योन्याभाव :→ "त्रैकालिकः नित्यः। 'न' इति प्रत्ययविषयः।"
यह दो वस्तुओं के ऐक्य का अभाव है। इससे दो वस्तुओं के पारस्परिक भिन्नता का बोध होता है। अर्थात् किसी वस्तु का दूसरी वस्तु में अभाव 'अन्योन्याभाव' कहलाता है। जैसे- 'आम केला नहीं है'। यहाँ आम का केले के रूप में अभाव है और केले का आम के रूप में । यह अभाव भी अत्यंताभाव की भाँति ही अनादि और अनंत है ।

इस प्रकार से, वैशेषिक दर्शन में अभाव को बहुत उपयोगी माना गया है। मोक्ष को सार्थक बनाने के लिए 'अभाव' की उपयोगिता की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। साथ ही वर्तमान समय में भी अभाव को देखा जा सकता है ।

—×—